US 6101

» पकने की अवधि 140 से 145 दिन
» आकर्षक मोटा दाना अधिक पैदावार
» प्रतिकूल परिस्थितियों में खड़े रहने की क्षमता

US 6201

» पकने की अवधि 130 से 135 दिन
» आकर्षक, स्वादिष्ट और महीन दाना
» प्रतिकूल परिस्थितियों में खड़े रहने की क्षमता

US 6206

» पकने की अवधि 120-125 दिन
» लम्बी घनी बाली के साथ भरपूर दाने
» महीन दाना
» प्रतिकूल परिस्थितियों में खड़े रहने की क्षमता

US 6312

» पकने की अवधि 110-115 दिन
» सुगंधित, लम्बे, पतले व आकर्षक दाने
» प्रतिकूल परिस्थितियों में खड़े रहने की क्षमता
» भरपूर उपज

PRABAL (US 6160)

» पकने की अवधि 115-120 दिन
» मोटे एवं वज़नदार दाने
» भरपूर उपज

RATNAM (US 6460)

» पकने की अवधि 140-145 दिन
» महीन दाना
» खाने में स्वादिष्ट

US Agriseeds®
Seed that Works

SEEDWORKS®

धान की खेती की पद्धति

नर्सरी प्रबंधन

» समतल खेत में 2.5 मीटर चौड़ी एवं लम्बाई 10 मीटर अथवा आवश्यकतानुसार तथा ऊंचाई 5-10 से.मी. आकार की क्यारी तैयार करनी चाहिए ताकि उचित जल निकासी हो सके।
» 400 वर्ग मीटर क्षेत्र के लिए 3 क्विंटल गोबर की खाद बुवाई से 2 सप्ताह पूर्व प्रयोग करें तथा 5 किलो यूरिया, 3.75 किलो DAP और 1.25 किलो MOP को बेसल डोज के रूप में उपयोग करें और 15 दिनों के बाद प्रति वर्ग मीटर क्षेत्र में 3.75 किलो यूरिया प्रयोग करें।
» 8-10 किलो बीज को 12-14 घंटे के लिए भिगोएं तथा बुवाई से पूर्व उसे कार्बेन्डाजिम (50%WP) 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।
» बेहतर अंकुरण सुनिश्चित करने के लिए बीजों को छाया में बोरी से ढककर 18-24 घंटे तक रखें।
» अंकुरित बीजों को 20-25 ग्राम प्रति वर्ग मीटर की दर से समान रूप से बुवाई करें।
» स्वस्थ नर्सरी उगाने के लिए आवश्यकतानुसार पौध संरक्षण और खरपतवार नियंत्रण के उपाय करें।

मुख्य खेत की तैयारी

» मुख्य खेत को 2-3 बार जुताई करके अच्छी तरह से तैयार करें, उसके बाद पलेवा करें और रोपाई से 2 सप्ताह पहले सुझाई गयी मात्रा में गोबर की खाद प्रयोग करें।
» प्रत्यारोपण से एक दिन पहले 50% नाइट्रोजन व पोटाश तथा फॉस्फोरस की पूरी मात्रा प्रयोग करें, और खेत को अच्छी तरह से समतल करें।
» 21-25 दिन की पौध को 2-3 सेमी गहराई पर 2-3 पौधे प्रति स्थान पर रोपित करें और पंक्ति से पंक्ति 20 सेमी तथा पौधे से पौधे 15 सेमी की दूरी रखें।

पोषक तत्व प्रबंधन

» उर्वरकों का उपयोग मिट्टी परीक्षण रिपोर्ट और स्थानीय राज्य कृषि विश्वविद्यालयों की सिफारिशों के आधार पर किया जाना चाहिए। उर्वरकों की सामान्य अनुशंसित मात्रा नीचे दी गई तालिका के अनुसार है।

उर्वरक	अनुशंसित मात्रा
गोबर की खाद	3-4 टन/एकड़
यूरिया	90 किग्रा/एकड़
डी ए पी	50 किग्रा/एकड़
एम ओ पी	40 किग्रा/एकड़

» यूरिया की कुल मात्रा को तीन बार में प्रयोग किया जाना चाहिए- 50% बेसल डोज के रूप में, 25% टिलरिंग अवस्था में और शेष 25% बूटिंग चरण में। पोटेशियम - 50% बेसल के रूप में और शेष 50% प्री-बूटिंग अवस्था में। बेहतर उपज लेने के लिए जिंक और आयरन का भी प्रयोग किया जाना चाहिए।

जल प्रबंधन

» पौध अवस्था, कल्ले बनते समय, पुष्पावस्था आरंभ और बालियां निकलने की अवस्था धान की फसल में जल की क्रांतिक अवस्थायें है। मुख्य खेत में प्रारंभिक 30 दिनों के लिए 2-3 सेमी जल स्तर बनाए रखें। अधिकतम टिलरिंग अवस्था तक जल स्तर को 4-5 सेमी तक बढ़ाएं। उसके बाद धान के पकने तक जल स्तर को 4-5 सेमी बनाए रखें। कटाई से 10 दिन पहले पानी पूरी तरह से निकाल दें।

खरपतवार प्रबंधन

» बेहतर खरपतवार प्रबंधन के लिए निम्नलिखित खरपतवार नासी दवाओं का प्रयोग करें:
» प्रेटीलाक्लोर 50 ईसी @ 500 मिली/एकड़ रोपाई के 24 घंटे के भीतर।
» बिस्पाइरिबैक सोडियम @ 120 मिली/एकड़ खरपतवार के 2-4 पत्ती चरण में।
» खराब जल प्रबंधन और मिश्रित खरपतवार के उच्च दबाव की स्थिति में पायराजोसुल्फ्यूरॉन + बिस्पाइरिबैक सोडियम (80 ग्राम + 100 मिली/एकड़) को 4-6 पत्तियों की अवस्था में प्रयोग करें।

रोग एवं कीट प्रबंधन

कीट	प्रबंधन
तना छेदक	फिप्रोनिल 80% WG @ 20-25 ग्राम/एकड़ या फ्लुबेंडियामाइड 480 SC @ 20 मिली/एकड़ का छिड़काव करें
बी.पी.एच	बुप्रोफेजिन 25% W/W SC @ 320 मिली/एकड़ या पायमेट्रोजिन @ 120 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें

रोग	प्रबंधन
बी एल बी	स्ट्रेप्टोमाइसिन 8 ग्राम + कॉपर ऑक्सीक्लोराइड @ 400 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें और 10 दिनों के बाद दोहराएं। नाइट्रोजन की अधिकता से बचें।
झुलसा या झोंका	टेबुकोनाज़ोल 50%+ ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25% w/w WG (75 WG) 80 ग्राम/एकड़
शीथ ब्लाइट	एजोक्सिस्टोबिन + टेबुकोनाजोल @ 330 मिली/एकड़ अथवा पेंसीक्यूरॉन 250 SC @ 240-300 मिली/एकड़ का छिड़काव करें
कंडुवा	बूटिंग और प्री-फ्लावरिंग चरण में प्रोपिकोनाजोल @ 200-250 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। नाइट्रोजन उर्वरकों की अधिक मात्रा में प्रयोग से बचें

कटाई: जब 80-85% दानें सुनहरे पीले रंग के हो जाएं और डंठल हरा रहे फसल की कटाई करनी चाहिए।